एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान तथा बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ व सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

गीतों की दो और किताबें

हिन्दी-भाषी क्षेत्र के लोगों के जीवन के संघर्षों और सुख-दुख, हँसना-गाना, जीत-हार के जनगीतों का संग्रह है **जवाब दर सवाल।**

मूल्य: ₹ 12 रुपए **पृष्ठ : 89**

प्रतिध्वनि समूह ने देश भर में घूम-घूमकर हिन्दी तथा कई दूसरी भाषाओं के लोकगीत सीखे हैं और गाए हैं। इन्हीं गीतों का संकलन है **बोल अरी ओ धरती बोल।**

मूल्य: ₹ 12 रुपए **पृष्ठ : 66**

ISBN: 978-81-87171-59-1

मूल्य: ₹ 15.00

A0703H

कबीरा सोई पीर है जो जाणे पर पीर

मालवा के कबीर भजनों का संग्रह

एकलव्य का प्रकाशन

कबीरा सोई पीर है
जो जाणे पर पीर
(मालवा के कबीर भजनों का संग्रह)

चित्रः मनोज कुलकर्णी

पहला संस्करणः मार्च 1994/3000 प्रतियाँ
पहला पुनर्मुद्रणः सितम्बर 2004/3000 प्रतियाँ
दूसरा पुनर्मुद्रणः जनवरी 2011/2000 प्रतियाँ
70 gsm मेपलिथो एवं 130 gsm आर्टकार्ड कवर
ISBN: 978-81-87171-59-1
मूल्यः ₹ 15.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
फैक्सः (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः श्रेया ऑफसेट, भोपाल, फोनः (0755) 427 5001

कबीरा सोई पीर है
जो जाणे पर पीर

मालवा के कबीर भजनों का संग्रह

एकलव्य का प्रकाशन

अनुक्रमणिका

1. सन्तो देखत जग बौराना
2. क्यों भूलीगी थारो देस
3. अवधू भजन भेद है न्यारा
4. कोई सफा न देखा दिल का
5. मौको कहाँ ढूँढे रे बन्दे
6. तेरा मेरा मनुवा
7. भाई रे दुइ जगदीश कहाँ ते आया
8. कहाँ से आया कहाँ जाओगे
9. जोगी मन नी रंगाया
10. पंडित छाण पियो जल पाणी
11. अवधू दोनों दीन कसाई
12. साधौ पांडे निपुन कसाई
13. मन तुम नाहक दूँद मचाये
14. पंडित वाद वदे सो झूठा
15. धातु की धेनु दूध नहीं देती
16. मुल्ला कहो किताब की बातें
17. जा बसे निरंजन राय
18. नाम से मिल्या ना कोई
19. म्हारो हीरो हेराणा कचरा में
20. मानुष तन बौराणा
21. बेराग कठे है मेरा भाई
22. तन काया का मंदिर
23. अमल करे सो पाई
24. ना जाने तेरा साहेब कैसा है
25. पंडित तुम कैसे उत्तम कहाये
26. जब मैं भूला रे भाई
27. भक्ति करो ब्रह्मांड में
28. घट-घट में रामजी बोले
29. संदर्भ ग्रन्थ

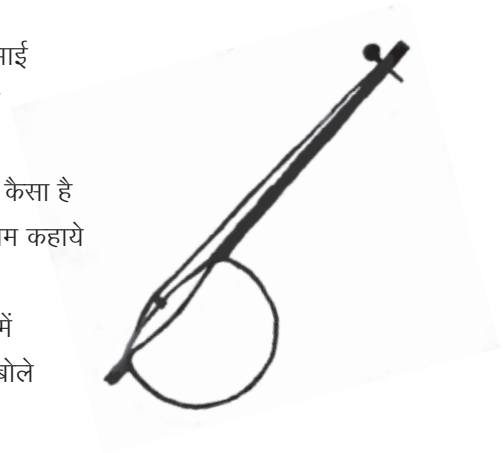

कटु बचन कबीर के सुनत आग लग जाए

कबीर, कई दूसरे लोकप्रिय कवियों की तरह ही, एक जीती-जागती परम्परा का अंग हैं। कबीर की साखियाँ और पद हमारे देश में आम लोगों की रोज़मर्रा की बातचीत और सूझ-बूझ के हिस्से हैं। दरअसल कबीर की बानी को उनकी मृत्यु के बहुत समय बाद, कबीर के पद गाने वाले घुमन्तु गायकों से सुनकर लिखा गया। पंजाब, राजस्थान, पूर्वी उत्तर प्रदेश आदि में इस तरह संग्रहित शुरुआती पदों में काफी भिन्नताएँ देखी जा सकती हैं। इससे ऐसा लगता है कि लोगों ने कबीर को अपनाया और अपने समय के हिसाब से बदलकर उसे और समृद्ध भी बनाया।

मध्यप्रदेश के मालवा अंचल (इन्दौर, देवास, उज्जैन, शाजापुर, सीहोर) में भी गाँव-गाँव में बड़े पैमाने पर कबीरपंथी और कबीर भजन मंडलियाँ हैं। कबीरपंथ बलाई समुदाय में विशेष तौर पर मौजूद है जो चारों वर्णों के बाहर और अछूत माना जाता है। समाज के इस दलित शोषित वर्ग के बीच कबीर की बानी का यूँ फैलना ऐतिहासिक महत्व रखता है। कबीर के पद एक ओर तो इन लोगों को तार्किक और आलोचनात्मक चिंतन का एक औज़ार देते हैं। दूसरी ओर ये इन्हें अमूर्त तात्विक चिंतन और बहस का अंग बनने का भी मौका देते हैं, जिससे आम तौर पर इन्हें बाहर रखा जाता है।

एकलव्य पिछले कई सालों से मालवांचल की कबीर भजन मंडलियों के साथ काम करती आई है। 1990 में शुरू हुए इस रिश्ते के दरम्यान कबीर भजनों व विचारों को सुनने समझने का अवसर मिला। भजन मंडलियों के साथियों की पहल व भागीदारी से 2 जुलाई 1991 को कबीर भजन एवं विचार मंच का गठन किया गया। कबीर भजन मंडलियों के सदस्यों के अलावा यह कबीर के विचारों से प्रेरित शिक्षकों, विद्यार्थियों, किसानों, छोटे दुकानदारों व मज़दूरों का एक खुला मंच है। इसका प्रमुख उद्देश्य कबीर के विचारों का लोकव्यापीकरण है।

इस तारतम्य में हर महीने की 2 तारीख की रात एकलव्य के देवास कार्यालय में कबीर भजन संध्या आयोजित की जाती रही है। हर माह इस इलाके की कई मंडलियाँ देवास आकर भजन गाती और आज के ज़माने में इनके अर्थ और सार्थकता पर चर्चा करतीं हैं। बाद में इनमें से कई मंडलियाँ साक्षरता तथा अन्य कामों से भी जुड़ी रही हैं।

इस प्रक्रिया में कबीर भजन मंडलियों के माध्यम से मालवा में कबीर के बारे में वर्तमान सोच को समझने का हमें मौका मिला। बाद में भारतीय इतिहास शोध संस्थान, दिल्ली के सहयोग से देवास ज़िले के तीन तहसीलों में कबीर के पदों का भाषाशास्त्रीय अध्ययन एवं उनका व्यवस्थित लिपिकरण भी किया गया। कबीर के पदों के इस संग्रह में इन्हीं में से कुछ पद शामिल किए गए हैं। इनमें प्रयुक्त मालवी शब्दों के हिन्दी समानार्थी शब्द हरेक पद के नीचे दिए गए हैं।

कबीर भजन संध्या में कबीर से मुखातिब होना एक अनोखा अनुभव है। इन भजनों का संगीत पारम्परिक और बेहद समृद्ध है। इनमें शास्त्रीय संगीत का गहरा पुट नज़र आता है। हमें उम्मीद है कि इस पुस्तिका की मदद से आप भी ये भजन गा-गुनगुना सकेंगे।

यह पुस्तिका इस उम्मीद के साथ भी प्रकाशित की जा रही है कि आज के दौर में हम कबीर के पदों के ज़रिए विभिन्न धर्मों और समुदायों के बीच रिश्ते जोड़ने के साथ-साथ धर्म को फिर से परख सकेंगे।

एकलव्य समूह

सन्तो देखत जग बौराना[1]

साखी - वही महादेव वही मुहम्मद, ब्रह्म आदम कहिए।
को हिन्दू को तुरुक कहावै, एक जिमी[2] पर रहिए।।

टेक - सन्तो देखत जग बौराना।
साँच कहो तो मारन धावै[3] झूठे जग पतियाना[4]।।

चरण - नेमी देखा धर्मी देखा, प्रात करे असनाना।
आतम[5] मारि पषाणहि[6] पूजे, उनमें किछउ न ज्ञाना।।

बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़े कितेब कुराना।
कै मुरीद[7] तदबीर[8] बतावै, उनमें उहै जो ज्ञाना।।

आसन मारि डिम्भ[9] धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।
पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्भ भुलाना।।

टोपी पहिरे माला पहिरे, छाप तिलक अनुमाना।
साखी शब्दै गावत भूले, आतम खबरि न जाना।।

हिन्दू कहै मोहिं राम पियारा, तुरुक कहै रहिमाना।
आपुस में दोउ लरि-लरि[10] मूये[11], मरम न काहू जाना।।

घर घर मन्तर देत फिरत हैं, महिमा के अभिमाना।
गुरु सहित शिष्य सब बूढ़े[12], अन्त काल पछिताना।।

कहहिं कबीर सुनो हो सन्तो, ई सब भरम भुलाना।
केतिक[13] कहौ कहा नहिं माने, सहजे सहज समाना।।

1. **पगलाना (उन्मत्त होना)**
2. **ज़मीन**
3. **दौड़ना**
4. **विश्वास करना**
5. **जीवित (आत्मा)**
6. **पत्थर**
7. **शिष्य (चेला)**
8. **उपाय**
9. **ध्यान**
10. **लड़-लड़**
11. **मरे**
12. **डूबना (पश्चाताप करना)**
13. **कितनी बार**

क्यों भूलीगी थारो देस

साखी - ऐसी मति संसार की, ज्यों गाडर[1] का ठाठ[2]।
एक पड़ा जेहि गाड़[3] में, सबै जाहि तेहि बाट।।

टेक - क्यों भूलीगी थारो देस दीवानी क्यों भूलीगी थारो देस हो -

चरण - भूली मालण[4] पाती रे तोड़े, पाती पाती में जीव हे रे।
पाती तोड़ देवत को चड़ाई, वो देवत नरजीव[5] बावरी।।

डाली ब्रह्मा पाती बिसनु, फूल शंकर देव हे।
फूल तोड़ देवत को चड़ाई, वो देवत नरजीव।।

गारा की गणगौर[6] बणाई, पूजे लोग लुगाई हो।
पकड़ टाँग पाणी में फेंकी, कहाँ कई सकलाई[7]।।

देश देश का भोपा[8] बुलाया, घर माय बैठ घुमाया हो।
नायल[9] फोड़ नरेटी[10] चढ़ावे, गोला[11] खुद गटकावे।।

दूधा भात की खीर बणाई, खीर देवत को चढ़ावे।
देवत ऊपर कुत्ता रे मूते, खीर गीलोरी[12] गटकावे।।

जीता बाप को जूतम जूता, मरया गंगाजी पहुँचावे।
भूखा था जब भोजन ना दिया, कव्वा[13] बाप बणावे।।

भेरु भवानी आगे छोरा छोरी माँगे, सिर बकरा का साँटे[14]।
कहे कबीर सुणो रे भई साधो, पूत[15] पराया मत काटे।।

1. भेड़ 2. झुण्ड 3. गड्ढा 4. बागबान की पत्नी 5. अचेतन (निर्जीव) 6. एक प्रतिमा (जो विशेष पर्व पर बनाते हैं) 7. सच्चाई 8. जाण (ऐसा मानते हैं कि ये उस देवता के प्रतिनिधि हैं) 9. नारियल 10. नारियल का खोल 11. नारियल की गरी 12. गिलहरी 13. कौआ 14. बदले में (चढ़ाकर) 15. पुत्र

अवधू भजन भेद है न्यारा

साखी - माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर।
कर का मनका डारि के, मन का मनका फेर।।

टेक - अवधू, भजन भेद है न्यारा।।

चरण - क्या गाये क्या लिखी बतलाये, क्या भर्मे[1] संसारा।
क्या संध्या-तर्पण के कीन्हें, जो नहि तत्व बिचारा।।

मुंड मुड़ाये सिर जटा रखाये, क्या तन लाये छारा[2]।
क्या पूजा पाहन[3] के कीन्हें, क्या फल किये अहारा[4]।।

बिन परिचै साहिब हो बैठे, विषय करै व्यवहारा।
ग्यान-ध्यान का मरम[5] न जाने, बात करे अहंकारा।।

अगम अथाह महा अति गहरा, बीज खेत निवारा[6]।
महा तो ध्यान मगन है बैठे, काट करम की छारा।।

जिनके सदा अहार अंत में, केवल तत्व विचारा।
कहै कबीर सुनो हो गोरख, तारौ सहित परिवारा।।

1. भ्रमित होना
2. भभूत रमाना
3. पत्थर
4. भोजन
5. भेद
6. डालना

कोई सफा[1] न देखा दिल का

साखी - कबीर संगत साधु की, नित[2] प्रीत कीजे जाय।
दुर्मति दूर बहावसि[3], देखी सूरत जगाय।।

टेक - कोई सफा न देखा दिल का।

चरण - बिल्ली देखी बगला देखा, सर्प जो देखा बिल का।
ऊपर-ऊपर सुन्दर लागे, भीतर गोला मल[4] का।।

काजी देखा मौला देखा, पंडित देखा छल का।
औरन[5] को बैकुंठ बताये, आप नरक में सरका[6]।।

पढ़े लिखे नहीं, गुरुमंत्र को, भरा गुमान कुमति का।
बैठे नहीं साधु संगत में, वरण[7] करे जाति का।।

मोह की फाँसी पड़ी गले में, भाव करे नारी का।
काम क्रोध दिन रात सतावै, लानत ऐसे तन का।।

सतनाम की मुठी पकड़ ले, छोड़ कपट सब दिल का।
कहै कबीर सुणों सुलताना, पैरों फकीरी खिलका[8]।।

1. साफ-सुथरा
2. हमेशा
3. बहाना
4. गंदगी
5. दूसरे को
6. जाना, पड़ना
7. अभिमान
8. वेशभूषा

मौको[1] कहाँ ढूँढे रे बन्दे

साखी - दौड़त-दौड़त दौड़िया, जहाँ तक मन की दौड़।
दौड़ थका मन थिर[2] हुआ, तो वस्तु ठौर की ठौर।।

टेक - मौको कहाँ ढूँढे रे बन्दे, मैं तो तेरे पास।

चरण - ना मैं देवल[3] न मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौनों क्रिया-करम में, नहीं जोग-बैराग में।।

ना मैं छगरी[4] ना मैं भेड़ी, ना मैं छुरी गँडास में।
नहीं खाल में नहीं पूँछ में, ना हड्डी ना मांस में।।

खोजी होय तो तुरत मिलिहौं[5], पल भर की तलाश में।
कहे कबीर सुणो भाई साधो, सब साँसन की साँस में।।

1. मुझे
2. स्थिर
3. मंदिर
4. बकरी
5. मिलना

तेरा मेरा मनुवा

साखी - सात दीप नौ खण्ड में, सतगुरु फेंकी डोर।
हंसा डोरी ना चढ़े, तो क्या सतगुरु का जोर।

टेक - तेरा मेरा मनुवा कैसे एक होई रे।

चरण - मैं कहता हो आँखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी,
मैं कहता सुरझावन[1] हारी, तू राख्यौ उरझाई[2] रे।।

मैं कहता हो जागत रहियो, तू रहता है सोई रे।
मैं कहता निर्मोही रहियो, तू जाता है मोही रे।।

जुगन-जुगन समुझावत हारा, केणो न मानत कोई रे।
राह भी अंधी, चाल भी अंधी, सब-धन डारा खोय रे।।

सतगुरु धारा निर्मल बैवे, वामें[3] काया धोई रे।
कहत कबीर सुणो भई साधो, तब वैसा ही होई रे।।

1. **सुलझाने की**
2. **उलझाकर**
3. **उसमें**

भाई रे दुइ[1] जगदीश कहाँ ते आया

साखी - हिरदा भीतर आरसी[2], मुख देखा नहीं जाय।
मुख तो तबहि देखहि, जो दिल की दुविधा जाय।

टेक - भाई रे दुइ जगदीश कहाँ ते आया, कहुँ कौनें भरमाया।

चरण - भाई रे दुइ जगदीश कहाँ ते आया, कहुँ कौनें भरमाया।
अल्लाह राम करीमा केशव, हरि हजरत नाम धराया।।

गहना एक ते कनक ते गहना, इन में भाव न दूजा।
कहन सुनन को दो करिथापे[3], इक निंमाज इक पूजा।।

वही महादेव वही मुहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिये।
कोई हिन्दू कोई तुरुक कहावै, एक जिमी पर रहिये।।

वेद कितेब पढ़े वे कुतबा, वे मौलाना वे पांडे।
बेगर बेगर नाम धरायो, एक मटिया के भांडे[4]।।

कहहिं कबीर इ दोनों भूले, रामहिं किनहूँ[5] न पाया।
वे खस्सी[6] वे गाय कटावै, बादहिं[7] जन्म गमाया।।

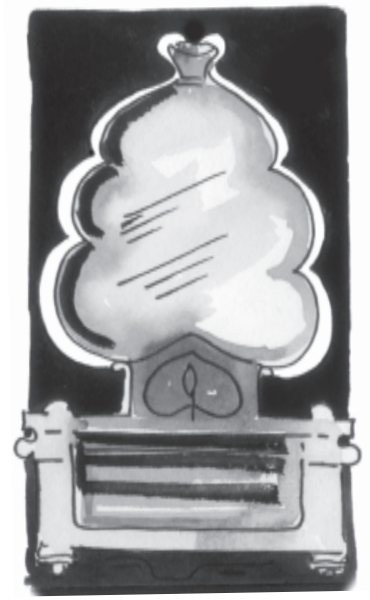

1. **दो-दो**
2. **काँच (शीशा)**
3. **स्थापना करना**
4. **मटके**
5. **कहीं भी**
6. **बकरी**
7. **बेकार**

कहाँ से आया कहाँ जाओगे

साखी - अलख[1] इलाही[2] एक है, नाम धराया दोय।
कहे कबीर दो नाम सुनी, भरम[3] पड़ो मति कोय।

टेक - कहाँ से आया कहाँ जाओगे, खबर करो अपने तन की।
सतगुरु मिले तो भेद बतावें, खुल जाय अन्तर घट की।

चरण - हिन्दू मुसलिम दोनों भुलाने, खटपट माय रिया[4] अटकी[5]।
जोगी जंगम शेख सन्यासी, लालच माय रिया भटकी।।

काजी बैठा कुरान बाँचे, जमी जोर वो करे चटकी।
हमदम साहेब नहीं पेचाना, पकड़ा मुरगी ले पटकी।।

माला मुन्दरा तिलक छापा, तीरथ बरत में रिया भटकी[6]।
गावे बजावे लोक रिझावे, खबर नहीं अपने तन की।।

बाहर बैठा ध्यान लगावे, भीतर सुरता[7] रही अटकी।
बाहर बंदा भीतर गंदा, मन मैल मछली झटकी।।

बिना विवेक से गीता बाँचे, चेतन को लगी नहीं चटकी।
कहे कबीर सुणो भाई साधो, आवागमन में रिया भटकी।।

1. **ईश्वर**
2. **अल्लाह**
3. **भ्रम में**
4. **रहे**
5. **लगना (महसूस करना)**
6. **भ्रमित**
7. **सूरत**

जोगी मन नी रंगाया

साखी - सिद्ध भया तो क्या भया, चहु दिस[1] फूटी बास[2]।
अन्दर वाके बीज है, फिर उगन की आस[3]।

टेक - जोगी मन नी रंगाया, रंगाया कपड़ा।
पाणी में न्हाई-न्हाई पूजा फतरा[4], तने मन नी रंगाया।

चरण - जाई जंगल जोगी धुणी लगाई हो।
राख लगाई ने होया गदड़ा[5]।।

जाई जंगल जोगी आसन लगाया।
डाडी रखाई ने होया बकरा।।

मुंड मुड़ाई जोगी, जटा बड़ाई हो।
कामी[6] जलाई ने होया हिजड़ा।।

दूध पियेगा जोगी बालक बछवा हो।
गुफा बणाई ने होया उन्दड़ा[7]।।

कहे कबीर सुणो भाई साधो हो।
जम[8] के द्वारे मचाया झगड़ा।।

1. **दिशा**
2. **कामना**
3. **उम्मीद**
4. **पत्थर**
5. **गधा**
6. **कामवासना**
7. **चूहा**
8. **यम**

पंडित छाण पियो जल पाणी

साखी - बैस्नों भया तो क्या भया, बूझा नहीं विवेक।
छापा तिलक बनाई करि, दुविधा लोक अनेक।

टेक - पंडित छाण पियो जल पाणी, तेरी काया कहाँ बिटलाणी[1]।

चरण - वही माटी की गागर होती, सौ भर के मैं आई।
सौ मिट्टी के हम तुम होते, छूती कहाँ लिपटाणी[2]।।

न्हाय धोय के चौका दीना, बहुत करी उजलाई।
उड़ मक्खी भोजन पे बैठी, बूढ़ी तब पंडिताई।।

छप्पन कोटि यादव गलि-ग्या, मुनि जन शेष अठ्ठासी।
तैतीस कोटि देवता गलि-ग्या, समदर[3] मिल गई माटी।।

हाड़[4] झरी-झरी[5], चाम[6] झरी-झरी, मांस झरी दूध आया।
नदियाँ नीर बहि कर आयो, रक्त बूँद पशु सरया[7]।।

जल की मछली जल में जन्मी, सावड़[8] कहाँ धोवाई।
कहे कमाल में पूछूँ पंडित, छूती[9] कहाँ से आई।।

1. अपवित्र होना
2. लगना
3. समुद्र
4. हड्डियाँ
5. पिघलना
6. चमड़ी
7. कंकाल
8. आँवल
9. छुआछूत

अवधू दोनों दीन कसाई

साखी - कटू बचन कबीर के, सुनत आग लग जाय।
शीलवंत[1] तो मगन भया, अज्ञानी जल जाय।।

टेक - अवधू दोनों दीन कसाई।

चरण - हिन्दू बकरा मिण्डा मारे, मुसलमान मुर्गाई।
काँच खोल[2] के करे हलाला, रक्त की नदिया बहाई।।

हिन्दू घड़ा छूवन नहिं देवे, छूते ही करे लड़ाई।
वेश्या के पायन तर[3] सोवे, कहाँ गई हिन्दुआई।।

हिन्दुअन की हिन्दुआई देखी, तुर्कन की तुर्काई।
अल्ला राम का मरम[4] न जाना, झूठी सौगंध खाई।।

मोटी जनेऊ बम्मन पेने, ब्राह्मनी को नहिं पेनाई।
जनम-जनम की भई वो सुद्रा, उने परस्यों[5] तने[6] खाई।।

नदी किनारे सुअर मरग्या, मछली नोंचकर खाई।
वो मछली तुर्कन ने खाई, कहाँ गई तुर्काई।।

मुसलमान और पीर औलिया, सब मिल पंथ चलाई।
कहे कबीर सुणो भई साधो, घर में करै सगाई।।

1. विवेकी
2. धारदार हथियार
3. पास
4. मर्म (भेद)
5. परोसा हुआ
6. तूने

साधौ पांडे निपुन[1] कसाई

साखी - एकै त्वचा हाड़ मल मूत्रा, एक रुधिर एक गूदा।
एक बूँद से सृष्टि रची है, को ब्राह्मन को शुद्रा।

टेक - साधौ, पांडे निपुन कसाई।

चरण - बकरी मारि भेड़ी को धावै[2], दिल में दरद[3] न आई।
करि असनान तिलक दै बैठे, विधि सो देवि पुजाई।
आतम[4] मारि पलक में बिनसे[5], रुधिर की नदी बहाई।।

अति पुनित[6] ऊँचे कुल कहिये, सभा माहि अधिकाई।
इनसे दिच्छा[7] सब कोई माँगे, हँसि आवे मोहि भाई।।

पाप-कपट की कथा सुनावै, करम करावै नीचा।
बूड़त दो परस्पर दीखे, गहे बाँहि जम खींचा।।

गाय वधै सो तुरुक कहावै, यह क्या इनसे छोटे।
कहै कबीर सुणो भाई साधो, कलि में ब्राह्मन खोटे।।

1. कुशल
2. तैयार होना
3. दया
4. आत्मा
5. नष्ट होना
6. पवित्र
7. दीक्षा (गुरु बनाना)

मन, तुम नाहक[1] दूँद[2] मचाये

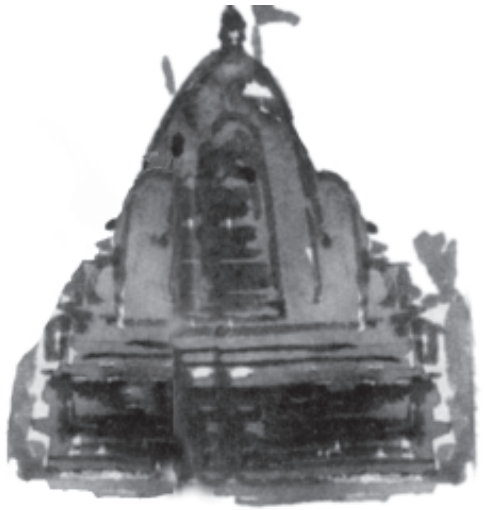

साखी - मन मतंग माने नहीं, जब लग गथा[3] न खाय।
जैसे विधवा इस्त्री, गरभ रहे पछताय।

टेक - मन तुम नाहक दूँद मचाये।

चरण - करि असनान, छूवो नहिं काहू, पाती फूल चढ़ावे।
मुरति से दुनिया फल माँगे, अपने हाथ बनाये।।

यह जग पूजै देव-देहरा, तीरथ व्रत नहावे।
चलत-फिरत में पाँव थकित भये, दुख कहाँ समाये।।

झूठी काया झूठी माया, झूठे झूठन खाये।
बाँझिन गाय दूध नहिं देत है, माखन कहाँ से पाये।।

साँचे के संग साँच बसत है, झूठे मारि हटाये।
कहैं कबीर जहँ वस्तु है, सहजै दरसन पाये।।

1. बेकार 2. उत्पात (नाटक) 3. गंदगी

पंडित वाद वदे[1] सो झूठा

साखी - दुविधा[2] जाके मन बसे, दयावन्त जीव नाही।
कबीर त्यागो ताहि को, भूलि देखो जिन्ह नाहीं।

टेक - पंडित वाद वदे सो झूठा
राम कहे जगत गति होवे
तो खाँड[3] कहे मुख मीठा।

चरण - पावक[4] कहे पाँव जो डाहै[5], जल कहै तृष्णा बुझाई।
भोजन कहे भूख सो भागे, तो दुनिया तर जाई।।

नर के संग सूवा[6] हरि बोले, हरि परताप न जाणै।
तब कहीं उड़ जाए जंगल में, तो हरि सुरति[7] न आवे।।

बिन देखे बिन दरस परस[8] बिना, नाम लिए क्या होई।
धन के कहे धनिक जो होई, तो निर्धन रहे ना कोई।।

साँची प्रीत विषय माया सो, हरि भक्तन को फाँसी।
कहे कबीर एक राम बिनु, बाँधे जमपुर जासी।।

1. **बोले**
2. **कष्ट/संशय**
3. **शक्कर**
4. **आग (अग्नि)**
5. **जलना**
6. **पक्षी (तोता)**
7. **याद (ध्यान)**
8. **परख**

धातु की धेनु[1] दूध नहीं देती

साखी - पाथर पूजत हरि मिले, तो मैं पूजु पहाड़।
वा से तो चाकी भली, पीस खाय संसार।।

टेक - धातु की धेनु दूध नहीं देती रे बीरा म्हारा,
धातु की धेनु दूध नहीं देती।

चरण - मंदिर में मूर्ति पदराई[2],
मुख से अन्न नहीं खाती रे।
उको पुजारी वस्त्र नी पेनावे,
तो नाँगी को नाँगी बैठी रेती रे।।

नाग पंचमी आवे जदे[3], कोले[4] नाग माँडती,
दूध दही से पूजती।
साँची को नाग सामें मिल जावे तो,
पूजा फेंकी ने भागी जाती रे।।

नाना नानी[5] ड़ाबड़ली[6] खेले, ढेला ढेली[7] खेले,
गोदी में लाड़ लड़ाती रे।
साँचा पीव को सुख जब देख्यो तो,
ढेला ढेली को ठुकराती रे।।

कहे कबीर सुणो भई साधो, यो पंथ है निर्वाणी[8] रे।
जो इना पंथ की करे खोजना,
उसे समझो ब्रह्म ज्ञानी रे।।

1. **गाय**
2. **स्थापित करना**
3. **दीवार का कोना**
4. **कोयला**
5. **छोटी**
6. **लड़की**
7. **खिलौने**
8. **मोक्ष**

मुल्ला कहो किताब की बातें

साखी - हिन्दू के दया नहीं, मेंहर[1] तुरक के नाहीं।
कहे कबीर दोनों गए, लख[2] चौरासी माही।

टेक - मुल्ला कहो किताब की बातें।

चरण - जिस बकरी का दूध पिया, हो गई माँ के नाते।
उस बकरी की गर्दन काटी, अपने हाथ छुराते[3]।।

काम कसाई का करते हो, पाक करो कलमा ते।
यह मत उल्टा किसने चलाया, ज़रा नहीं लजाते।।

एक वृक्ष से सकल[4] पसारा[5], कीट पतंग जहाँते।
दूजा कहो कहाँ से आया, तापर[6] हमें खिजाते।।

कहे कबीर सुणो भई साधो, यह पद है निर्वारा[7]।
तनक[8] स्वाद जिव्या के कारण साफ नरक में जाते।।

1. दया
2. आने के लिए
3. सबमें
4. सबका
5. गुज़ारा
6. उस पर
7. निर्वाण
8. तनिक (थोड़ा सा)

जा बसे निरंजन राय

साखी - कस्तूरी कुण्डली बसे, मृग ढूँढे वन माहि।
जैसे राम घट-घट बसे, दुनिया जाने नाही।

टेक - जा बसे निरंजन राय, बैकुण्ठ कहाँ मेरे भाई।

चरण - कितना ऊँचा कितना नीचा कितनी है गहराई।
अजगर पंछी फिरे भटकता, कौन महल को जाई।।

जो नर चुन-चुन कपड़ा पेरे, चाल निरखता[1] जाई।
चार पदारथ[2] पाया नाही, मुक्ति की चाह नाही।।

कोई हिन्दू कोई तुरक कहावे, कोई बम्मन बन जाय।
मिटा स्वाँस जब जला पिंजरा[3], एक बरण[4] हो जाय।।

बंदी गऊ कबीर ने छुड़ाई, ले गंगा को न्हाई।
खोल डुपट्टा आँसू पोछे, चारा चरो मेरी माई।।

आदा सरग[5] तक पहुँचे हंसा, फिर माया घर लाई।
ले माया नरक में डूबी, लख चौरासी पाई।।

औंदा[6] आया, औंदा जाया, औंदा लिया बुलाई।
कहे कबीर ओंदी का जाया, कभीयन सीधा होई।।

1. देखना
2. वस्तु
3. शरीर
4. समान
5. स्वर्ग
6. उलटा

नाम से मिल्या ना कोई

साखी - हंसो का एक देश है, जात नहीं वहाँ कोय।
कागा करतब ना तज[1] सके, तो हंस कहाँ से होय।

टेक - नाम से मिल्या ना कोई रे साधो भाई
नाम से मिल्या ना कोई।

चरण - ज्ञानी मरग्या ज्ञान भरोसे, सकल भरमणा[2] के मांई।
दानी मरग्या दान भरोसे, कोड़ा[3] लक्ष्मी खोई।।

ध्यानी मरग्या ध्यान भरोसे, उल्टी पवन चड़ाई।
तपसी मरग्या तप भरोसे, नाहक[4] देह सताई।।

काठ[5] पखाण[6] और सुन्ना चाँदी, की सुन्दर मूरत बणाई।
ना मंदिर में ना मज्जित में, तीरथ बरत में नाई।।

खोजत बुझत सतगुरु मिलग्या, सकल भरमणा ढोई।
कहै कबीर सुणो रे भाई साधो, आप[7] मिटे तो गम होई।।

1. **छोड़**
2. **भ्रम**
3. **पैसा कोड़ी (धन)**
4. **बेकार**
5. **लकड़ी**
6. **धातु**
7. **संकीर्ण मनोवृत्ति (घमंड)**

म्हारो हीरो हेराणो[1] कचरा में

साखी - पूरब दिशा हरी को बासा, पश्चिम अल्लह मुकामा।
दिल में खोजि दिलहि मा खोजो, इहै करीमा रामा।।

टेक - म्हारो हीरो हेराणो कचरा में, पाँच पचीस का झगड़न में।

चरण - कोई पूरब कोई पश्चिम ढूँढे हो।
कोई पानी कोई पथरों में।।

कोई तीरथ कोई बरत करत हो।
कोई माला की जपरन में।।

सुनीजन मुनीजन पीर औल्या हो।
भूली गया सब नखरन में।।

धर्मदास के हीरा पाया हो।
बाँद लिया है हँसलन[2] में।।

1. **गुम हो जाना** 2. **हाथ**

मानुष तन बौराणा[1]

साखी - गल गुस्सा को काटिये, मिया कहर को मार।
जो पाँचों बिसमिल्ला करें, तो पावे दीवार।

टेक - मानुष तन बौराणा हंसा,

चरण - एक बकरी का बच्चा पाला, उसे धान खिलाया।
पाल पोस के मोटा किया, पूजा के कारण चढ़ाया।।

नर जीव आगे सरजीव[2] ठाढ़ा, खेंच खड़्ग मस्ताना।
सीस काट भूमि पर डारा, कौन देवत को चढ़ाया।।

बाहर से एक मुर्दा लाया, लूण[3] मिरच सब साथ।
उस मुर्दे की पकी रसोई, घर-घर होय बखाण।।

घर में एक मुर्दा होया, उसे देख डर पाया।
इस मुर्दे को जल्दी निकालो, जम होई ने डेरा दिया।।

कहे कबीर सुणो भई साधो, यो पंथ है निर्वाण।
जो इनी ममता ने बस करे, वो ही संत सुजान।।

1. **भ्रम में पड़ना**
2. **सजीव**
3. **नमक**

बेराग कठे[1] है मेरा भाई

साखी - सेख सबूरी बाहिरा, क्या हज काबै जाइ।
जाकि दिल साबित[2] नहीं, वाकौ[3] कहाँ खुदाय।

टेक - बेराग कठे है मेरा भाई, सब जग बँधिया[4] भरम के माही।

चरण - क्षर एक ना एक है, अक्षर ना कोई जप तापाई।
बावन अक्षर खोल कोल में, इनसे बचे ना कोई राई।।

ज्ञान ध्यान जप तप नहीं, साधन वेद कुराण ना बाणी।
छै राग छत्तीस रागणी, या सब काल खवाणी[5]।।

दस और दोय तीन और तेरह, यह मिल काल रचाई।
ओहं सोहं पोहं जोहं, इनकी तो सफा उड़ाई हो।।

योगी जती और सती सन्यासी, सब बँधिया[6] भरम के माही।
अनेक मुनिजन भूखों मर ग्या, नाहक देह सताई।।

तेरा बारी अजब झरोखा, ये मिल गोठे[7] आई हो।
कहे हो कबीर सुणो भाई साधो, गुरु बिन गेला[8] पाही।।

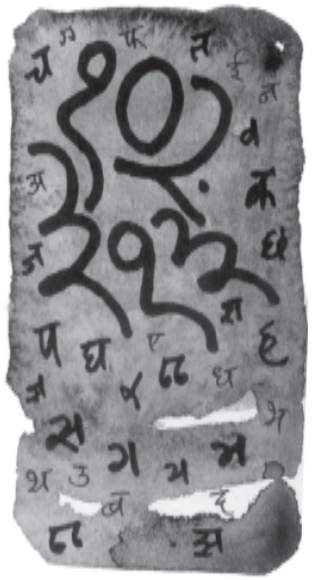

1. **कहाँ**
2. **शुद्ध (पवित्र)**
3. **उसको**
4. **आसक्त (बँधा हुआ)**
5. **समाना**
6. **बंधन**
7. **मंथन करना**
8. **सद्मार्ग**

तन काया[1] का मंदिर

साखी - मन मंदिर दिल द्वारखा, काया काशी जान।
दस द्वारे का पिंजरा, याहि[2] में ज्योत पहचान।

टेक - तन काया का मंदिर साधु भाई, काया राम का मंदिर।
इना मंदिर की शोभा पियारी, शोभा अजब है सुन्दर।।

चरण - पाँच तीन मिल बना है मंदिर, कारीगर घड़ा-घड़न्तर।
नौ दर[3] खुल्ले दसवाँ बन्द कर, कुदरत कला कलन्दर।।

इना मंदिर में उन्मुख[4] कुवला[5], वहाँ है सात समुन्दर।
जो कोई अमृत पिवे कुवे का, वाका भाग बुलन्दर।।

अनहद घण्टा बाजे मंदिर में, चढ़ देखो तुम अन्दर
अखण्ड रोशनी होय दिन राती, जैसे रोशनी चन्दर।।

बैठे साहेब मंदिर में, ध्यान धरो उनके अन्दर।
कहे कबीर साहब करो नेम से पूजा, जब दरसेगा[6] घट अन्दर।।

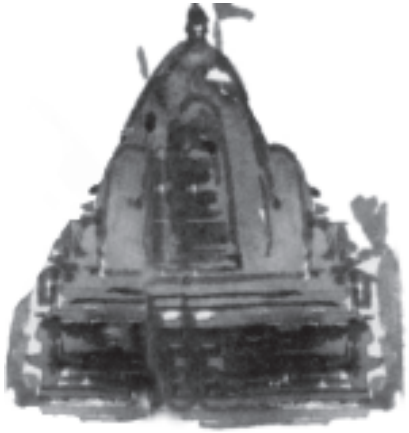

1. शरीर
2. इसी में
3. द्वार
4. उलटा
5. कुआँ (खोपड़ी) (विचारधारा)
6. मिल जाएगा

अमल करे सो पाई

साखी - कहंता[1] तो बहुत मिला, गहंता[2] मिला न कोय।
सो कहंता बहि जान दे, जो न गहंता होय।

टेक - अमल करे सो पाई रे साधो भाई अमल करे सो पाई।
जब तक अमल नशा नहीं करता, तब लग मजा न आई।

चरण - आन्दो[3] आप लिए कर दीपक, कर परकास दिखाई।
औरन आगे करे चाँदनी, आप अंधेरा मांई।।

आन्दो हाथ अन्दर नहीं दरसे, जग में भलो कहाई।
दूत पूत का दानी रे बनकर, पाखंड पेट भराई।।

काजी पंडित पच पच हारे बेद कुराण के मांई।
भणिया गुणिया ये नहीं समझे, याने कुण[4] समझाई।।

गुरु शरणो में माली लिखे लेखणो, सब संतन के मांई।
है कोई ऐसा फक्कड़ जग में, अपना अमल जमाई।।

1. कहने वाला
2. कहे पर चलने वाला
3. अन्धा
4. कौन

ना जाने तेरा साहेब कैसा है

साखी - काँकर पाथर जोरि[1] कै, मस्जिद लई बनाय।
ताँ चढ़ी मुल्ला बाँग[2] दे, बहरो भयो खुदाय।

टेक - ना जाने तेरा साहेब कैसा है।

चरण - मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारै, क्या साहेब तेरा बहिरा है।
चिउंटी[3] के पग नेवर[4] बाजै, सो भी साहेब सुनता है।।

पंडित होय के आसन मारै, लम्बी माला जपता है।
अंतर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहेब लखता[5] है।।

ऊँचा नीचा महल बनाया, गहिरी नेव[6] जमाता है।
चलने का मनसूबा[7] नाही, रहने को मन करता है।।

कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, गाड़ि जमीं में धरता है।
जिस लहना[8] है सो लै जैहै, पापी बहि बहि मरता है।।

सतवन्ती को गजी[9] मिलै नहि, वैश्या पहिरै खासा[10] है।
जेहि घर साधु भीख न पावै, भइवा खात बतासा है।।

हीरा पाय परख नहि जानै, कौड़ी परख न करता है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, हरि जैसे को तैसा है।।

1. जोड़कर
2. अज़ान
3. चींटी
4. आवाज़
5. देखता
6. नींव
7. इच्छा (तैयारी)
8. लेना
9. साधारण वस्त्र (मलमल)
10. महँगे वस्त्र

पंडित तुम कैसे उत्तम कहाये

साखी - पंडित और मशालची[1], दोनों को सूझे नाहि।
औरन को करे चाँदनी, आप अंधेरा मांई।

टेक - पंडित तुम कैसे उत्तम कहाये।

चरण - एक जाइनि[2] से चार बरन[3] भे, हाड़ मास जीव गूदा।
सुत परि दूजे नाम धराये, वाको करम न छूटा।।

छेरी खाये भेड़ी खाये, बकरी टीका टाके।
सरब[4] मांस एक है पंडित, गैया काहे बिलगाए[5]।।

कन्या जाति जाति की बेचत[6], कौने जाति कहाये।
आपन कन्या बेचन लागे, भारी दाम चढ़ाय।।

जहँ लगि पाप अहै दुनिया में, सो सब काँध चढ़ाये।
कहै कबीर सुनो हो पंडित, घर चौरासी या छाय।।

1. उजाला करने वाला
2. योनि
3. वर्ण
4. सभी
5. अलग करना
6. दहेज प्रथा

जग मैं भूला रे भाई

साखी - हंसा तू तो सबल था, हलुकी[1] अपनी चाल।
रंग कुरंगे रंगिया, किया और लगवार[2]।

टेक - जब मैं भूला रे भाई, मेरे सतगुरु जुगत[3] लखाई[4]।

चरण - किरिया-करम-अचार मैं छाँड़ा, छाँड़ा तीरथ का न्हाना।
सगरी दुनिया भई सयानी, मैं ही इक बौराना।।

ना मैं जानूँ सेवा-बन्दगी, ना मैं घण्ट बजाई।
ना मैं मूरति धरि सिंघासन, ना मैं पुहुप[5] चढ़ाई।।

ना हरि रीझै जपतप कीन्हे, ना काया के जारे।
ना हरि रीझै धोती छाँड़े, ना पाँचों[6] के मारे।।

दाया राखि धरम को पालै, जग से रहे उदासी।
अपना-सा जीव सबको जानै, ताहि मिलै अविनासी।।

सहै कुशब्द वाद को त्यागै, छाँड़े गर्व गुमाना।
सत्तनाम ताहि को मिलि है, कहै कबीर सुजाना।।

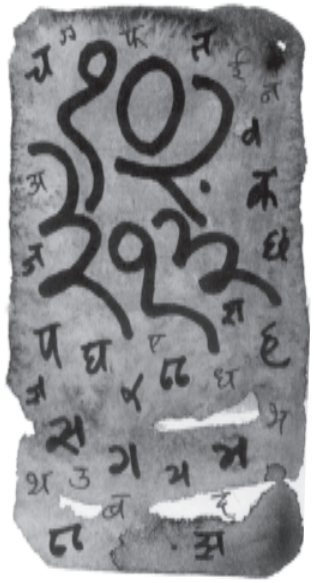

1. दूसरा रंग चढ़ा लेना
2. तुच्छपन
3. युक्ति
4. बताना
5. फूल
6. शारीरिक लक्षण

भक्ति करो ब्रह्माण्ड में

साखी - गुरु लोभी शिष्य लालची, दोनों खैले दाव।
दोनों बपुरे बूडही[1], चढ़ी पत्थर की नाव।

टेक - भक्ति करो ब्रह्माण्ड में साधु-[2]
ऐसी भक्ति करो मन मेरे, आठ पहर आनन्द में हो।

चरण - बामण तो माँगण[2] में फँसग्या[3], बणिया फँसग्या धन में हो।
भोपा जाय मड़ी[4] में फँसग्या, नहीं देव मड़ी में हो।।

गिरी पुरी और भारती, पूज रहे पत्थर में हो।
जादू टोटका[5] मुठ[6] साधके, लोग लगे लूटन में हो।।

बाबा तो खावण में फँसग्या, चेला फँसा मुण्डन में हो।
जोगी जाय जंगल में घुसग्या, नहीं देव जंगल में हो।।

कहे कमाली कबीर की चेली, ढूँढ लिया सब खंड[7] में हो।
कहे कबीर सुणो भाई साधो, छोड़ दे पाखंड को हो।।

1. भूल में
2. माँगना
3. लगना
4. मंदिर (आश्रम)
5. जादू-टोना
6. जादू का एक तरीका
7. चारों ओर

घट-घट में रामजी बोले

साखी - एक समाना सकल में, सकल समाना ताहि[1]।
कबीर समाना मुझ[2] में, वहाँ दूसरा नाहि।

टेक - घट-घट में रामजी बोलेरी, परगट[3] पीयाजी बोले री,
मंदिर में कई डोलती, फिरे म्हारी हैली[4]।

चरण - मूरत कोर[5] मंदिर में मैली[6], या मुख से कभी न बोली वो हैली।
ई सब दरवाजे बन्द कर राखे, बिना हुकुम कुण खोलेरी।।

या रामनाम की बालोद[7] उतरी, बिना ग्राहक कुण खोले वो हैली।
मूरख ने कई ज्ञान बतावे, राई परबत के होले री।।

थारी नाबी कमल से गंगा निकली, पाँची कपड़ा धोईरी हैली।
बिन साबुन से दाग कटेरी, निर्मल काया धोई लेरी।।

जहोरी बजार लग्यो घट भीतर दिल चाहै सो लइलेरी हैली।
हीरा तो जोहरी ने बीन लिया, कोई मूरख काँकरा[8] तोलेरी।।

नाथ गुलाबी सतगुरु मिल ग्या, जिनने दिल की घुंडी खोली वो हैली।
भवानी नाथ शरण सतगुरु की, हरभज निर्मल होई लेरी।।

1. सब
2. विवेक
3. प्रकट (प्रत्यक्ष)
4. इंसान
5. बनाना (बनाकर)
6. रखना
7. अधिक मात्रा में
8. कंकर (पत्थर)

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कहे कबीर (चन्द्रदेव सिंह)
   शकुन प्रकाशन, 3625, सुभाष मार्ग, नई दिल्ली
2. कबीर (प्रभाकर माचवे)
   साहित्य अकादमी, 35, फिरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली
3. कबीर ग्रन्थावली (डॉ. पारसनाथ तिवारी)
   राका प्रकाशन, 80 ए, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद
4. कबीर - परिचय तथा रचनाएँ (सुदर्शन चोपड़ा)
   हिन्द पॉकेट बुक्स, जी.टी. रोड, नई दिल्ली
5. कबीर मीमांसा (रामचन्द्र तिवारी)
   लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद
6. कबीर शब्दावली (गंगाशरण शास्त्री)
   कबीर वाणी प्रकाशन, सी 23/5, वाराणसी
7. कबीर धारा : मन लागो यार फकीरी में
   डायमंड पॉकेट बुक्स, 27/5, दरियागंज, नई दिल्ली
8. पारख प्रकाश कबीर संस्थान साहित्य (संत अभिलाषदास)
   पारख प्रकाश कबीर संस्थान प्रीतमनगर, सुलेम सराय
9. कबीरा खड़ा बाजार में (भीष्म साहनी)
   राजकमल प्रकाशन, 8, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली
10. कबीर (डॉ. विजयेन्द्र स्नातक)
    राधाकृष्ण प्रकाशन, 2/38 अंसारी मार्ग, नई दिल्ली
11. कबीर (हज़ारी प्रसाद द्विवेदी)
    राजकमल प्रकाशन, 1 बी नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली
12. मालवा के कबीर भजनों के गायकों की हस्तलिखित डायरियाँ।
13. मालवा क्षेत्र के सम्पूर्ण कबीर भजनों का ध्वन्यांकन संग्रह
    (ऑडियो कैसेट)
14. विभिन्न कबीर मठों के कबीर बीजक एवं अन्य साहित्य।
15. कबीर के प्रामाणिक भजनों का संग्रह।

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान तथा बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ व सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

गीतों की दो और किताबें

हिन्दी-भाषी क्षेत्र के लोगों के जीवन के संघर्षों और सुख-दुख, हँसना-गाना, जीत-हार के जनगीतों का संग्रह है **जवाब दर सवाल।**
मूल्य : **12 रुपए** **पृष्ठ : 89**

प्रतिध्वनि समूह ने देश भर में घूम-घूमकर हिन्दी तथा कई दूसरी भाषाओं के लोकगीत सीखे हैं और गाए हैं। इन्हीं गीतों का संकलन है **बोल अरी ओ धरती बोल।**
मूल्य : **12 रुपए** **पृष्ठ : 66**

मूल्य : 10.00 रुपए ISBN : 81-87171-59-6

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल में व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं।

एकलव्य का मुख्य उद्देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। अपने काम के दौरान हमने पाया है कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को स्कूली समय के बाद, स्कूल से बाहर और घर में भी, रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों। किताबें तथा पत्रिकाएँ इन साधनों का एक अहम हिस्सा हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान तथा बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ व सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य मध्यप्रदेश में भोपाल, होशंगाबाद, पिपरिया, हरदा, देवास, इन्दौर, उज्जैन, शाहपुर (बैतूल) व परासिया (छिन्दवाड़ा) में स्थित कार्यालयों के माध्यम से कार्यरत है।

गीतों की दो और किताबें

हिन्दी-भाषी क्षेत्र के लोगों के जीवन के संघर्षों और सुख-दुख, हँसना-गाना, जीत-हार के जनगीतों का संग्रह है **जवाब दर सवाल।**
मूल्य : **12 रुपए** **पृष्ठ : 89**

प्रतिध्वनि समूह ने देश भर में घूम-घूमकर हिन्दी तथा कई दूसरी भाषाओं के लोकगीत सीखे हैं और गाए हैं। इन्हीं गीतों का संकलन है **बोल अरी ओ धरती बोल।**
मूल्य : **12 रुपए** **पृष्ठ : 66**

मूल्य : 10.00 रुपए ISBN : 81-87171-59-6